"जैन एकता व विश्वशान्ति की मेरी मंगल-कामना"

(हल्दीघाटी में आचार्य कनकनन्दी के चातुर्मास के उद्देश्य)

-आचार्य कनकनन्दी

(राग : हल्दीघाटी में समर....., तुम दिल की धड़कन.....)
आओ मिलकर मंगल करे/(विकास करे), जैन एकता मंच का।
जिसने कराया चातुर्मास, आचार्य कनकनन्दी का।।

जैन एकता मंगलम्.....जैनं जयतु शासनम्.....
जैन धर्मोऽस्तु मंगलम्.....जीव धर्मोऽस्तु मंगलम्.....।।

संस्थापक है मांगीलाल मादरेचा साधु गुणी प्रमोदी।
उत्साही साहसी सेवाभावी संगठन प्रेमी धर्मरागी।।

मनोहरलाल लोढा संरक्षक, जो संरक्षण देते हैं।
लालचन्द बम्बोरी अध्यक्ष, अध्यक्षता वे करते हैं।। (1)

सोहनलाल धाकड़ महामंत्री एकता मंत्र देते हैं।
पुखराज धोखा कोषाध्यक्ष कोष उपयोग करते हैं।।

शीला पोखरना महिला अध्यक्ष, महिला एकता करती है।
सहयोगी महिलारत्न भी एकता (में) सहयोग करती है।। (2)

एकता के द्वारा प्रेम बढ़ता बढ़ता है सहयोग भी।
स्व-पर-विश्व कल्याण हेतु लगता तन-मन-धन भी।।

जैन धर्म की प्रभावना होती होती पावन भावना।
वैर विरोध फूट नशे भी, होती शान्ति आराधना।। (3)

'कनकनन्दी' के चातुर्मास द्वारा, हो रही ज्ञान की वर्षा।
धर्म दर्शन विज्ञान सहित, हो रही वात्सल्य वर्षा।।

दूर निकट के ग्राम नगर के, आ रहे हैं धर्म/(एकता, साधु) प्रेमी।
तन-मन-धन सहयोग करते, यथायोग्य दानप्रेमी।। (4)

दिगम्बर जैन शाह परिवार भी, उठा रहे हैं लाभ अनेक।
और भी अनेक दिगम्बर जैन भी, सहयोग कर रहे हैं अनेक।।

आ रहे ज्ञानी विज्ञानी धनी-गरीब जैन-अजैन।
ज्ञान-विज्ञान आशीर्वाद पाते, करते स्वयं को धन्य।। (5)

——————××××——————

Scanned by TapScanner

पंचमकाल के समवसरण सम, लगती है हल्दीघाटी।
भेद-भाव व वैर-विरोध छोड़, करते हैं धर्मप्रीति।।

वर्तमान की आवश्यकता यह, वर्द्धमान की यह नीति।
विकास करने के सूत्र यह है, यह है शान्ति की रीति/(नीति)।। (6)

'कनकनन्दी' की भावना भी यह, यह है धर्म की प्रीति।
इसी नीति को विश्वस्तर पर, फैलाना सभी की रीति।।

चातुर्मास अनन्तर 'कनकनन्दी', ससंघ विहार करेंगे।
(1) दिग् श्वेताम्बर हिन्दू ग्राम में, मंगल प्रवास करेंगे।।
(2) जैन-अजैन ग्राम नगर में, मंगल प्रवास करेंगे।। (7)

भावना शक्ति व्यवस्था आग्रह से चातुर्मास भी करेंगे।
जैन एकता मंच को वैश्विक बने शुभ आशीष देंगे।।

'कनकनन्दी' का आशीष सभी को बनो हे सच्चा धार्मिक!
स्व-पर-विश्वकल्याण करके, पाओ हे! शान्ति-आत्मिक।। (8)

हल्दीघाटी, दिनांक 18.07.2013, रात्रि 12 से 1.28

"सद्गृहस्थ (श्रावक) के 35 गुण"

-आचार्य कनकनन्दी

(राग : तुम दिल की धड़कन.....)

सद्गृहस्थों/(श्रावकों) के स्वरूप को जानो,
पैंतीस (35) प्रकार लक्षणों को मानो।

गृहस्थ मोक्षमार्गी नैतिक मानो,
इह पर हितकारी व्यक्तित्व जानो।।धु.।।

'न्याय उपार्जित वित्त' सहित,
'शिष्टाचार प्रशंसक' युक्त।

'विवाह-विवेक' सहित गृहस्थ,
'पापभीरू' 'देशाचार पालक'।। (1)

'परनिन्दा रहित' 'सही गृह वास'
'सत्संगति युक्त' 'मातृ-पितृ भक्त'।

'उपद्रव रहित स्थान (में) निवास',
'निंद्य प्रवृत्ति का त्याग' विशेष।। (2)

'व्यय की मर्यादा' गुण सहित,
'वित्तानुसार देश' सहित।

'अष्ट गुण युक्त बुद्धि' सहित,
'सुश्रुता श्रवण ग्रहण' युक्त।। (3)

'धारण तर्क अपोह' सहित,
'अर्थ विज्ञान तत्त्वज्ञान' सहित।

'प्रतिदिन धर्म श्रवण' युक्त,
'अजीर्ण न भोजी' 'सुयोग्य भुक्त युक्त'।। (4)

'अबाधित त्रिवर्गसाधन' युक्त,
'दान-दया-दत्ति' गुण सहित।

'पद अवहेलना'/(अभिनिवेश) दोष रहित,
'गुण पक्षपाती' गुण सहित।। (5)

'अयोग्य देश-काल का त्याग',
'स्व-पर बलाबल सुज्ञात'।

'ज्ञानी-गुणी-साधु-पूजन' रत,
'पोष्य-पोषक'/'(परिवार पोषण)' गुण सहित।। (6)

'दीर्घदर्शी' 'विशेषज्ञ' 'कृतज्ञ',
'लोकप्रियता' 'सलज्जता' युक्त।

'दयालु' 'सौम्य' 'परोपकार' युक्त,
'अन्तरंग षड्वैरियों' का त्याग।। (7)

'इन्द्रिय विजयी' सद्गृहस्थ,
और भी अनेक गुण सहित।

'सप्त व्यसन' 'अष्टमद' त्याग,
'कनक' मान्य है सद्गृहस्थ।। (8)

हिरणमगरी सेक्टर-11, दिनांक 18.06.2013, रात्रि 12.50

Scanned by TapScanner

"संवेदनशील व्यक्तित्व वालों के भाव व्यवहार"

-आचार्य कनकनन्दी

(राग : रघुपति राघव....., तुम दिल की धड़कन....., छोटी-छोटी गैया.....)

संवेदनशील जो व्यक्ति होते.....दया दान सेवा से युक्त होते।
स्व-पर उपकारी नम्र होते.....मैत्री प्रमोद साम्यभावी होते।।

ईर्ष्या घृणा तृष्णा (व) द्वेष से.....कलह विसंवाद नहीं करते।
भेद-भाव विद्रोह नहीं करते.....अनादर अपमान नहीं करते।। (1)

दूसरों के दुःखों से दुःखी होते.....दूसरों को सुख दे सुखी होते।
कोमल, हृदया माता सम होते.....दूसरों के अहित से रिक्त होते।।

क्षमाशील सहिष्णु मृदु होते.....दूसरों के सुख हेतु भाव भाते।
स्व से अन्य को यदि दुःख होता.....पश्चाताप करते क्षमा मांगते।। (2)

मन वच काय व कृत कारित.....अनुमत से अहित नहीं करते।
उदारभावी महापुरुष होते.....'वसुधैव कुटुम्ब' का भाव धरते।।

बुद्धिजीवी से भी श्रेष्ठ वे होते.....धनी मानी से भी ज्येष्ठ वे होते।
सत्ता सम्पत्ति प्रसिद्धि वालों से.....भाव व्यवहार से पावन होते।। (3)

मदर टेरेसा नाइटेंगेल आप्टे.....महात्मा गांधी व विनोबा भावे।
ममतामयी माता सम वे होते.....संवेदनशील वे महान् होते।।

संवेदना से बुद्धि सुबुद्धि होती.....उपलब्धि का सदुपयोग भी होता।
सेवा एकता व शान्ति बढ़ती.....'कनकनन्दी' को संवेदना भाती।। (4)

हल्दीघाटी, दिनांक 19.07.2013, मध्याह्न 3.30

पुण्यार्जक

शाह खुशपाल पुत्र श्री जीतमल जी, माता-अजब बाई, पत्नी-आशा देवी,
पुत्री-दामाद-मोहिता-भूपेश, भानजा-शौर्य,
पुत्र-पुत्रवधू-(1) प्रतीक-कोमल (2) नितिन-प्रीति, पौत्री-कलशी

----xxxx----

Scanned by TapScanner